नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आतंकवाद का समूल नाश हो

ऑस्ट्रेलिया में अपने धार्मिक त्योहार का शांतिपूर्वक उत्सव मना रहे 16 यहूदियों की नृशंस हत्या और कई लोगों के घायल होने की घटना ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया है. यह हमला आकस्मिक नहीं था, न ही अंधाधुंध हिंसा का परिणाम. यह एक चयनित, लक्षित और वैचारिक आतंकवादी हमला था, जिसका उद्देश्य एक विशेष समुदाय को डराना, विभाजन पैदा करना और वैश्विक अस्थिरता को बढ़ावा देना था. ऐसे में इस घटना की तुलना भारत में हुए पहलगाम जैसे आतंकी हमलों से की जाना पूरी तरह तार्किक है, जहां निर्दोष नागरिकों को केवल उनकी धार्मिक पहचान के आधार पर निशाना बनाया गया .सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि इस हमले के तार पाकिस्तान से जुड़े हमलावरों से सामने आ रहे हैं. यह कोई संयोग नहीं, बल्कि वर्षों से चली आ रही उस संरचना का हिस्सा है, जिसमें आतंकवाद को राज्य-प्रायोजित रणनीति के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है. फर्क सिर्फ इतना है कि अब इसकी आग केवल भारत, इज़राइल या अफगानिस्तान तक सीमित नहीं रही, बल्कि ऑस्ट्रेलिया जैसे अपेक्षाकृत सुरक्षित माने जाने वाले देशों तक पहुंच चुकी है. दरअसल, यह घटना एक बड़े सवाल को फिर से केंद्र में लाती है कि आतंकवाद की परिभाषा आखिर क्या है ? आज भी दुनिया के कई देश आतंकवाद को अपनी सुविधा के अनुसार परिभाषित करते हैं. कहीं 'अच्छे' और 'बुरे' आतंकवादी गढ़े जाते हैं, तो कहीं राजनीतिक या कूटनीतिक हितों के चलते आंखें मूंद ली जाती हैं. यही चयनात्मक दृष्टिकोण आतंकवाद को खाद-पानी देता है.

भारत वर्षों से यह कहता आया है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई साझा, स्पष्ट और बिना दोहरे मानदंडों के होनी चाहिए. संयुक्त राष्ट्र से लेकर अंतरराष्ट्रीय मंचों तक भारत ने बार-बार जोर दिया कि जब तक आतंकवाद को उसकी विचारधारा, फंडिंग, प्रशिक्षण और सुरक्षित पनाहगाहों सहित परिभाषित नहीं किया जाएगा, तब तक उसकी जड़ें नहीं कटेंगी. दुर्भाग्यवश, भारत की इन चेतावनियों को लंबे समय तक 'क्षेत्रीय समस्या' मानकर नजरअंदाज किया गया .ऑस्ट्रेलिया की यह घटना इस भ्रम को तोड़ती है. यह साफ संकेत है कि आतंकवाद किसी सीमा, धर्म या भूगोल का मोहताज नहीं होता. आज यदि यहूदियों को निशाना बनाया गया है, तो कल कोई और समुदाय, कोई और देश इसकी चपेट में आ सकता है. इसलिए यह मान लेना कि आतंकवाद 'दूसरों की समस्या' है, सबसे बड़ी भूल है. अब समय आ गया है कि दुनिया आतंकवाद को लेकर अपनी ढुलमुल नीति छोड़े. आतंकवादी चाहे किसी भी विचारधारा, झंडे या मजहब की आड़ लें,वे केवल आतंकवादी हैं. उनके समर्थक, उन्हें शरण देने वाले और उन्हें राजनीतिक संरक्षण देने वाले भी उतने ही दोषी हैं .भारत की मांग अब केवल एक कूटनीतिक वक्तव्य नहीं, बल्कि वैश्विक सुरक्षा की अनिवार्यता बन चुकी है.

आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त कार्रवाई, वित्तीय नेटवर्क पर कठोर प्रहार, सुरक्षित ठिकानों का अंत और वैचारिक कट्टरता पर रोक कि, ये सब अब विकल्प नहीं, मजबूरी हैं. ऑस्ट्रेलिया की घटना ने दुनिया को चेतावनी दे दी है. सवाल यह है कि क्या वैश्विक समुदाय अब भी आंखें मूंदे रहेगा, या फिर भारत की वर्षों पुरानी अपील को गंभीरता से लेकर आतंकवाद के समूल नाश की दिशा में ठोस कदम उठाएगा? निर्णय अब टालने का नहीं, करने का समय है.

अंतरिक्ष स्टेशनों की स्थापना की होड़ क्यों?

2035 में भारत का स्पेस स्टेशन

यूरोप, जापान और कनाडा के साथ मिलकर अमेरिका जो नया लूनर गेटवे नामक स्टेशन बना रहा है, इसका उद्देश्य चंद्र कक्षा में एक मिनी-अंतरिक्ष स्टेशन बनाना है, जो आर्टेमिस मिशन का केंद्र बनेगा. यूरोप, जापान और कनाडा अपने खास वैज्ञानिक प्रयोगों के मद्देनजर ऐसा कर रहे हैं. अमेरिका के नए स्टेशन मॉड्यूलर होंगे, जो निजी कंपनियों के प्रयोग के अनुकूल रहेंगे अर्थात व्यावसायिक लाभ भी इसके उद्देश्यों में है.

दुनियाभर में अंतरिक्ष स्टेशनों के निर्माण की होड़ तेज हो रही है, अमेरिका, चीन, यूरोप, जापान, कनाडा जैसी शक्तियों के साथ-साथ निजी कंपनियां धरती की निचली कक्षा और चंद्रमा के चारों ओर स्टेशन बनाने की होड़ में हैं. एक दशक बाद जब भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन कार्यरत होगा, तब अंतरिक्ष स्टेशनों की तादाद 7 तक पहुंच चुकी होगी और अगले आधे दशक में संभवत: ये दर्जनभर हों. नासा निर्मित इंटरनेशनल अंतरिक्ष स्टेशन 2031 में प्रशांत महासागर में गिराकर नष्ट कर दिया जाएगा तय है, इसके नष्ट होने के बाद उसकी जगह लेने के लिए इतने सारे स्टेशनों की आवश्यकता क्यों? बोइंग, सिएरा स्पेस के साथ ब्लू ओरिजिन 'ऑर्बिटल रीफ', एक्सिओम स्पेस तथा वास्ट 'हेवन-1' अंतरिक्ष स्टेशन विकसित करने में लगे हैं.

विभिन्न देशों के साथ-साथ निजी कंपनियों का इस क्षेत्र में कूदना बताता है कि जरूर इसका जबर्दस्त आर्थिक पहलू भी होगा. अंतरिक्ष स्टेशन का निर्माण भारी लागत वाला है. क्या यह संबंधित देश और कंपनियों को लागत के अनुरूप लाभ दे सकेगा या यह कारगुजारी दूसरे देश से अंतरिक्ष के क्षेत्र में बाजी मार ले जाने की सनक के लिए ही है? तकरीबन तय है कि 2035 में अपना अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित हो चुका होगा.

अंतरिक्ष स्टेशन की स्थापना केवल राष्ट्रीय गौरव, अपनी वैज्ञानिक प्रगति का दिखावा, अंतरिक्ष यात्रियों को वहां भेजने भर का माध्यम नहीं हैं. ये भू-राजनीतिक वर्चस्व, चंद्रमा मंगल अभियानों के लिए आधारभूत ढांचा तैयार करने और भविष्य की आर्थिक संभावनाओं, व्यावसायिक लाभ हेतु भी है. अंतरिक्ष स्टेशन किसी भी देश की वैज्ञानिक क्षमता, इंजीनियरिंग दक्षता और कक्षीय संचालन योग्यता को प्रमाणित करते हैं. इससे अंतरिक्ष में लगातार बने रहना संभव होता है, जो भविष्य में अंतरिक्ष खनन, चंद्र संसाधनों के दोहन, गहन अंतरिक्ष अनुसंधान और भविष्य के मानव मिशनों के लिए अनिवार्य है. भारत सहित कई देश मून मिशन में लगे हुए हैं. चंद्रमा पर बेस बनाने या बस्ती बसाने से पहले ये स्टेशन ही प्रशिक्षण के काम आएंगे.

अंतरिक्षीय पर्यटन का बाजार बढ़त पर है, 2030 के बाद यह सैकड़ों अरब डॉलर का उद्योग होगा. निजी कंपनियों की निगाह इस पर है और उसके लिए अंतरिक्ष स्टेशन अनिवार्य हैं. पहले यात्री यहां आएंगे और फिर आगे का सफर तय करेंगे. अंतरिक्षीय युद्ध के हौव्वे के बीच कई देशों के लिए ये रक्षा संबंधी आवश्यकता पूर्ति करने वाले हैं, क्योंकि इन्हें अंतरिक्ष युद्ध के संभावित मोर्चे के रूप में भी देखा जा रहा है.

अंतरिक्ष स्टेशन आगे की वैज्ञानिक क्रांति का मुख्य मंच बनेंगे नई दवाएं, उन्नत सामग्री, थ्रीडी प्रिंटिंग, माइक्रोग्रैविटी अनुसंधान, आपदा प्रबंधन तकनीक और अंतरिक्ष पर्यटन सब अंतरिक्ष स्टेशन से ही जुड़ते हैं. माइक्रोग्रेविटी के अलावा अभी ऐसे कई प्रयोग हैं, जो धरती पर संभव ही नहीं. इसलिए भविष्य में अंतरिक्ष स्टेशन अनुसंधान, खनन, रक्षा, उद्योग और स्पेस टूरिज्म का संयुक्त केंद्र होंगे. 2035 तक अंतरिक्ष स्टेशन मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करेंगे. दवा, उद्योग, रक्षा, मौसम, शिक्षा और पर्यटन तक.

आम जनता को इसका लाभ उन्नत दवाओं, तेज संचार, मौसम चेतावनी, आपदा प्रबंधन और सस्ते उपग्रह सेवाओं के रूप में मिलेगा. ऐसे में अंतरिक्ष स्टेशनों की स्थापना में लगी आपाधापी को आसानी से समझा जा सकता है और कहा जा सकता है कि यह होड़ अनुचित नहीं है. हर देश अपने-अपने अलग उद्देश्य से अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की कोशिश में हैं, किसी के लिए रक्षा प्रमुख मुद्दा है, कहीं उद्योग, कहीं वैज्ञानिक अनुसंधान और कहीं चंद्र अभियान!

-संजय श्रीवास्तव

इकोनॉमी को चुनौती, सोना-चांदी की महंगाई

युद्ध, मंदी और दुनियाभर में गहराते वित्तीय संकट, कहीं न कहीं सोने की चमचमाहट और चांदी की चकाचौंध के पीछे बड़ा कारण हैं. अगर हम सिर्फ भारत के संदर्भ में देखें तो सोने और चांदी की लगातार बढ़ रही कीमतों से आशय है कि लोग उद्योगों, स्टार्टअप और शेयर बाजार से निकालकर सुरक्षित और गैर उत्पादक संपत्ति यानी सोना-चांदी में लगा रहे हैं.

गुजरे 12 दिसंबर को सोना प्रति 10 ग्राम 4,114 रुपये बढ़कर अपने अब तक के सबसे ऊंचे स्तर 1,32,710 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया. इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के मुताबिक महज एक दिन पहले 24 कैरेट सोना 1,28,596 रुपये प्रति 10 ग्राम था. जबकि इसी साल 17 अक्टूबर को यह तब तक के सबसे ऊंचे स्तर 1,30,874 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया था. 12 दिसंबर 2025 को चांदी के दाम 6,899 रुपये बढ़कर 1,95,180 रुपये प्रति किलो हो गई. जबकि ठीक एक दिन पहले यह 1,88,281 रुपये प्रति किलो थी. अगर पिछले 12 दिनों को देखें तो इस दौरान चांदी 20,000 रुपये प्रति किलो बढ़ चुकी है. 1 दिसंबर 2025 को एक किलो चांदी 1,75,180 रुपये की थी और 5 दिसंबर 2025 को यह 1,79,025 रुपये प्रति किलो हो गई. इस तरह देखें तो अकेले सोना ही अपनी चमक से अंधा नहीं कर रहा बल्कि चांदी भी लगातार अपनी चमक से चौंधिया रही है. सोना-चांदी की दिन-ब-दिन बढ़ती चमक में कहीं न कहीं बेरौनक अर्थव्यवस्था की आशंकाएं भी छिपी हैं. दरअसल जब सोना-चांदी की कीमतें लगातार बढ़ती हैं और लंबे समय तक यह बढ़त न सिर्फ बरकरार रहती है बल्कि धीरे-धीरे ऊपर की तरफ ही बढ़ रही होती है, तो यह महज बाजार में लोगों की क्रय क्षमता की निशानी और सिर्फ एक कमोडिटी बाजार की खबरभर नहीं होती, बल्कि यह समूची अर्थव्यवस्था के मूड और उसकी दिशा का भी संकेत देती है. सोना और चांदी को पूरी दुनिया में 'सेफ हेवन एसेट' माना जाता है. लेकिन जब सोने की चमचमाहट और चांदी की चकाचौंध दिन-ब-दिन बढ़ती चली जाए, तो इसका मतलब यह होता है कि लोगों का शेयर बाजार में भरोसा घट रहा है. साथ ही इसका मतलब यह भी होता है कि वैश्विक या घरेलू आर्थिक अनिश्चितता बढ़ रही है.

- नरेंद्र शर्मा

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

मालवा- निमाड़ की डायरी

अपनी किरकिरी पर गुस्साए शाह

संजय व्यास

जनजातीय कार्य विभाग, भोपाल गैस राहत पुनर्वास विभाग और रतलाम जिला प्रभारी मंत्री कुंवर विजय शाह उस समय अपनी किरकिरी महसूस हुई, जब पता चला कि जिला विकास सलाहकार समिति की बैठक में उनके सवालों के जवाब सही सही न दे पा रहा व्यक्ति कोई अधिकारी नहीं बल्कि विभाग का मामुली कर्मचारी है.

मामला रतलाम जिले का है. वहां विजय शाह जिला विकास सलाहकार समिति की बैठक ले रहे थे. जब उन्होंने अक्षय ऊर्जा विभाग के कार्यो की प्रगति व समस्याओं की जानकारी चाही तो जबाव उन्हें संतुष्टीदायक नहीं लगे. उन्हें खुटका हुआ उक्त व्यक्ति की जानकारी में सामने आया कि वह तो विभाग में मैकेनिक पद पर है और विभाग के जिला अधिकारी ने उसे भेज दिया था. इस कृत्य को अधिकारी द्वारा की गई अपनी तौहिन मान विजय शाह बुरी तरह उखड़ गए, तत्काल मैकेनिक को बैठक से बाहर का रास्ता दिखाया.

उल्लेखनीय है कि अक्षय ऊर्जा विभाग का कार्यालय मंदसौर में स्थित है और विभाग के जिला अधिकारी राजेंद्र गोयल बताए जा रहे हैं. अब देखते हैं कि गोयल पर भडक़े हुए गुस्साए शाह क्या एक्शन लेते हैं, उधर घटना के बाद से गोयल की सिट्टी-पिट्टी गुम है.

पखवाड़े भर में अवार्ड और बदनामी दोनों

गत पखवाड़े ही देश में चर्चित हुआ मंदसौर का मल्हारगढ़ पुलिस थाना पुलिस कर्मियों के अति उत्साह में की कार्रवाई से कलंक का सामना कर रहा है. हाल ही में मल्हारगढ़ थाने का नाम उस समय चर्चा में आ गया था जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उसे देश के टाप 10 थानों में 9वें स्थान पर आने के लिए अवार्ड दिया था. पखवाड़ा भी नहीं बीता और इस थाने के पुलिस कर्मियों की हरकत से विभाग को शर्मसार होना पड़ गया.

ड्रग तस्करी के खिलाफ मुहिम में मल्हारगढ़ थाने के कुछ पुलिस कर्मियों ने अवार्ड के अति उत्साह में एक 12 वीं के होनहार छात्र को एनडीपीएस एक्ट में पकडक़र आरोपी बना दिया. परिजन मामले को हाईकोर्ट ले गए, पुलिस ने युवक को मल्हारगढ़ के श्मशान के सामने से गिरफ्तार करना बताया और बस यहीं से परिवार का माथा ठनका कि उनके बेटे को तो चलती बस से उठाया था, तो फिर दूसरी जगह से गिरफ्तारी क्यों दिखाई? फुटेज में साफ दिखा कि सिविल ड्रेस में पुलिसकर्मी युवक को बस से उतार रहे हैं. हाई कोर्ट में पुलिस के झूठ पर पड़ा पर्दा उठा तो इस अवॉर्ड विनिंग थाने की सच्चाई ने सबको हैरान कर दिया. दरअसल, हाईकोर्ट ने माना है कि नियमों का पालन नहीं हुआ. फिलहाल आरोपी छात्र कोर्ट में बेगुनाह साबित नहीं हुआ, लेकिन हाईकोर्ट ने पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं. इस दौरान एसपी ने मामले में टीआई सहित 6 पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है. साथ ही इन्हें विभागीय जांच का भी सामना करना पड़ेगा.

अभियान के लिए ताकते किसान

उज्जैन, मंदसौर, बड़वानी, धार जिले के किसानों के लिए लहलहाती फसलों के लिए हर साल नील गाय के झुंड संकट बने रहते हैं. फिसहाल इस मुसीबत का सामना उज्जैन जिले में घट्टिया और आसपास के इलाके के किसान कर रहे हैं. अभी खेतों में गेहूं-चना सहित फसलों की खेती हो रही है. फसलें पनपने की ओर है, ऐसे में नील गाय के झुंड के झुंड खेतों में आकर फसलों को नुकसान कर रहे हैं. जिससे किसानों में परेशानी व्याप्त है. शाजापुर जिले में भी कुछ समय पूर्व तक यही हाल था, लेकिन वहां बड़े पैमाने पर नीलगायों का रेस्क्यू कर वन्य अभयारण्य में भेज दिया गया, जिससे अब वहां के किसानो को राहत मिल गई है. उज्जैन व आसपास के किसान भी अब इसी तरह के अभियान की बाट जोह रहे हैं, पर वन विभाग की तरफ से कोई रिस्पांस मिलता नजर नहीं आ रहा.

निशानेबाज

मनरेगा के नए नाम पर ध्यान देना पूज्य बापू ग्रामीण रोजगार योजना

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज मन की बात सुनाने वाले प्रधानमंत्री मोदी की सरकार मनमानी करते हुए महात्मा गांधी के नाम से चलने वाली मनरेगा का नाम बदलने जा रही है. वह उसे पूज्य बापू ग्रामीण रोजगार योजना का नया नाम देगी.'

हमने कहा, 'इसमें मनमानी की क्या बात है. प्रॉडक्ट वही है सिर्फ लेबल बदल रहा है. इसे नई पैकिंग में स्वीकार कीजिए. जैसे पुराने मंदिर का जीर्णोद्धार होता है वैसे ही पुरानी योजना का पुनरोद्धार हो रहा है. महात्मा गांधी कहने से वह आत्मीयता नहीं झलकती जैसी बापू कहने से दिल को छू जाती है. नेहरू और सरदार पटेल भी महात्मा गांधी को बापू कहकर संबोधित करते थे. इसलिए मोदी सरकार का कदम बिल्कुल सही है. गुजरात में पिता को बापू मोदी-शाह सही राह दिखा रहे हैं. नई योजना में कामकाज के दिनों की तादाद वर्तमान 100 से बढ़ाकर 125 की जा रही है.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हमें तो लगता है कि मोदी सरकार व बीजेपी को गांधी नाम से एलर्जी है. उन्हें यह शब्द सुनते ही राजीव गांधी, सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की याद आती है. इसलिए वह गांधी की बजाय 'बापू' कहने के पक्ष में हैं. एमजी की बजाय अब पीबी अर्थात पूज्य बापू कहने की आदत डालिए. पीबी कहने से आपका बीपी या ब्लडप्रेशर नहीं बढ़ जाएगा. बीजेपी की सोच है कि देश कब तक गांधी-नेहरू के नाम की माला जपता रहेगा? समयानुसार परिवर्तन होते रहना चाहिए. नाम ही जपना है तो श्रद्धापूर्वक नमो नमो जपते रहो.'

हमने कहा, 'सरकार के पास अधिकार है कि वह कुछ न कुछ नयापन लाए. प्रधानमंत्री ने खुद को प्रधानसेवक कहा. पुराने को छोड़ नया संसद भवन बनवाया. शहरों व सड़कों के पुराने मुगलिया नाम बदल डाले. अब लोग शहरों को प्रयागराज, दीनदयाल, छत्रपति संभाजीनगर, अहिल्यानगर के नए नामों को स्वीकार कर चुके हैं. अहमदाबाद को भी कर्णावती कहने का प्रस्ताव है. इसलिए मानकर चलिए कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है. आप इसकी आदत डालिए.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12112 - डॉ. सागर खादीवाला

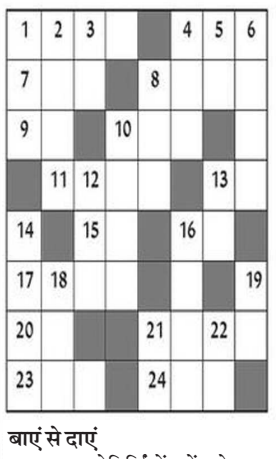

बाएं से दाएं

1.बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक जिसका मंदिर काठियावाड में है 4. निर्मित, बनाया हुआ (सं.) 7. शराबी, पियक्कड़ (सं.) 8. इस समय, इन दिनों 9. नाक का संक्षिप्त रूप 10 पार्वती, दुर्गा 11. अवैध, अनुचित (उर्दू) 13. सिरा, किनारा, कोना 15. उसी समय, इसी कारण 16. दरवाजे के किवाड़, औंधा 17. हिलना, गति, क्रिया 20. मापने की क्रिया या भाव, नाप 21. विरोध असंतोष आदि को प्रकट करने के लिए कल कारखानों आदि का बंद करना 23 नट जाति की स्त्री, नट की स्त्री 24. तानने की क्रिया या भाव, वह रस्सी जिस पर धोबी कपड़े सुखाते हैं

ऊपर से नीचे

1. जीना, सीढ़ी, मोक्ष प्राप्ति का उपाय (जैन) 2 हिलना, डोलना, तर्क-वितर्क 3. माप, परिमाण, नापने का काम 4. रात, रात्रि (सं.) 5. बांस की तीलियों का परदा, चिलमन (उर्दू) 6. इस्पात का तेज धारदार प्रसिद्ध हथियार, खड्ग 8. ध्वनि, शब्द 10. डरा हुआ 12. म. बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएं, बच्चा 13. दुर्ग, किला, प्राचीर 14. अतिथि 16. थामना, धरना, गिरफ्तार करना 18. फिसलना, उतार, रिपोर्ट 19. तट, किनारा 21. मारा हुआ 22. तपाने या पकाने के लिए पहुंचाई जाने वाली गर्मी

Solution 12111

मू	ढ़	म	ति		अं		वि
स		हा		अ	बा	धि	त
ल		रा	मे	श्व	र		र
	का	ज		गं		गु	ण
ह	या		आ	धा		ल	
त	प	शी	ल			ब	लि
ब	ल		य	जु	र्वे	द	
ल	ट	का		र्म		न	ष्ट

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी. पद एवं स्थान परिवर्तन के योग है. शारीरिक कष्ट का सामना करना पडेगा. भौतिक सुख प्राप्त होगा. उत्तरदायित्वों को सम्हालने की आवश्यकता है. वर्ष के मध्य में व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. यात्रा से कष्ट होगा. वर्ष के अन्त में विवाद एवं मतभेद हो सकते है. आय में सुधार होगा. भाईयों का सहयोग रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को रचनात्मक प्रयास सार्थक होंगे. भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है. दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थिति न आने दें. सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यो में वृद्धि होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि होगी. पद एवं प्रभाव बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का फुर्तीला स्वाभाव का, बुद्धिमान चतुर व्यवहार कुशल होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. ज्वर अतिसार, निमोनिया, आदि से 5 वर्ष की आयु तक कुछ तकलीफ होगी.बाद में स्वस्थ्य रहेगा. यात्राप्रिय एवं मनोरंजन का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

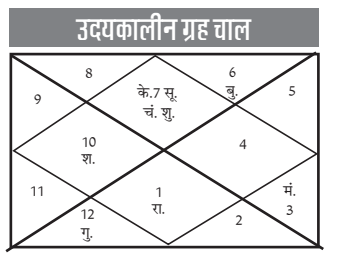

पंचांग

रा.मि. 25 संवत् 2082 पौष कृष्ण द्वादशी भौमवासरे रात 12/18, स्वाती नक्षत्रे दिन 3/13, अतिगण्ड योगे दिन 3/5, कौलव करणे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार तुला, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

पौष कृष्ण द्वादशी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, शक्कर सरसों, सोयाबीन, पायोलिन आदि में तेजी होगी. चना, अनाज, पर नरमी रहेगी. भाग्यांक 2697 है.

मेष- काननी मामले में लापरवाही से नुकसान होगा. साझेदारी लाभकारी रहेगी. अनावश्यक कार्यों पर खर्च होगा. कामकाज में बाधायें आयेंगी.

वृषभ- व्यापारिक सौदे लाभकारी रहेंगे. मामूली बात पर दोस्तों से विवाद की संभावना है. आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी. शारीरिक मानसिक शांति मिलेगी.

मिथुन- विरोधियों केकारण काम करने में परेशानी होगी, जीवनसाथी का साथ खुशी देगा. राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी. सामाजिक कार्यो में सहयोग मिलेगा.

कर्क- महत्वपूर्ण मामले में फैसला लेने से बचेंगे. अनहोनी का भय वृश्चिके बढ़ने से रोकेगा. स्वास्थ्य में सुधार होगा. नवीन योजनाओं का विकास होगा.

सिंह- मेहमानों के कारण अपना कार्यक्रम बदलना पड़ेगा. धार्मिक आयोजन सुखद रहेंगे. अनावश्यक विवादों को टालना चाहिये.

कन्या- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे. निजी कार्यो को पूरा करने में सफलता मिलेगी. शारीरिक सुख शांति तथा पारिवारिक दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा.

तुला- कार्यक्षेत्र में चल रही उलझनें दूर होंगी. दिल की बातें अपनों से कह दें, तनाव कम होगा. कार्यों में विवेक के साथ काम लेना हितकर रहेगा. परिश्रम अधिक रहेगा.

वृश्चिक- भावुकता में लिये गये फैसले बदलना पड़ेंगे. आत्म विश्वास बनाये रखें, कार्यों में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी. आमोद प्रमोद के अवसर प्राप्त होंगे.

धनु- नई जिम्मेदारियां आने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तता रहेगी. शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. यश मान सम्मान कीर्ति मिलेगी.बुजुर्ग व्यक्तियों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

मकर- मन ही मन किसी बात को लेकर परेशान रहेंगे. जोखिम के कार्य में समय बर्बाद होगा. सामाजिक कार्य बनेंगे. पूज्य व्यक्ति की सलाह हितकर रहेगी.

कुम्भ- धार्मिक कार्यों में शामिल होने से खुशी मिलेगी. लाभ होगा. मित्र मिलेंगे. आर्थिक समस्या का हल होगा. किये गये प्रयास सार्थक होंगे.

मीन- सहकर्मी आपके सीधेपन का लाभ उठाने का प्रयास करेंगे. पराक्रम में वृद्धि होगी. नये कार्यों के प्रति विशेष रूचि रहेगी. प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी.

SUDOKU 7244

	9				6			
	1					2		
5			7				3	
			4					6
		3				9		
4					8			
	7				9			8
		2					1	
			3				4	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7243

6	5	8	9	1	4	2	7	3
1	2	7	3	5	8	6	4	9
3	4	9	7	2	6	1	5	8
2	3	6	1	4	5	9	8	7
8	9	5	2	7	3	4	1	6
4	7	1	6	8	9	3	2	5
7	6	4	5	3	1	8	9	2
9	8	2	4	6	7	5	3	1
5	1	3	8	9	2	7	6	4